Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 2, January-2018, ISSN 2230-7540

भारत की संस्कृति-परम्परा और संगीत

Dr. Ila Malviya*

Head of Department, Department of Music, Arya Kanya Degree College, Allahabad

सार – *संस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति 'सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से सुट् आगम तथा क्तिन् प्रत्यय से हुई है। जिसका अर्थ है भलीभाँति परिष्कृत किया हुआ। धर्म, साहित्य, मानवीय मूल्य एवं आदर्श इन सभी के संचय का नाम ही संस्कृति है। किसी देश की उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन, आचार-विचार और जीवन पद्धति को जानने के लिए वहाँ की संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है।*

संस्कृति की प्रक्रिया एक साथ ही आदर्श को वास्तविक एवं वास्तविकता को आदर्श बनाने की प्रक्रिया है। संस्कृति का क्षेत्र इतना अधिक व्यापक और गहन है कि उसे किसी निश्चित परिभाषा में बाँधना कठिन है। संस्कृति द्वारा उत्तम मानसिक एवं सामाजिक गुण प्रादुर्भूत होते हैं। संस्कृति का आधार मुख्यतः आचारों से है। ये आचार ही संस्कार के रूप में स्थित है।[1]

संस्कार का अर्थ है परिष्कार और परिमार्जन की क्रिया। यही परिमार्जन, परिष्कार, और शुद्धि की क्रिया जब पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती है तो संस्कृति बन जाती है। वास्तव में मनुष्य के चरित्र और आदतों का ही परिष्कार होता है जो निखरकर आदर्शों, सदाचार और मूल्यों के नाम से सम्बोधित होता है।

----------X----------

आजकल एक फैशन सा चल पड़ा है कि मूल्य शिक्षा पर विचार- 'विमर्श किया जाये। ये मूल्य आखिर क्या है? जिनके लिए हम एकाएक इतने आतुर हो उठे हैं, उतावले हो गये हैं, जिनकी रक्षा के लिए हम उद्विग्न हैं। वास्तव में ये हमारे वहीं आदर्श हैं जो कहते-कहते और सुनते-सुनते शुष्क हो गये हैं और 'आदर्शवादी' होना व्यंग्य और कटाक्ष के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है। अतः विद्वानों ने इन आदर्शों को बचाने के लिए पुनः प्रयास करते हुए "मूल्य" शब्द का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है।

वास्तव में ये मूल्य 'मूल' अर्थात् जड़ से सम्बन्धित है। जब हम मूल्यों की बात करते हैं तो अपनी जड़ों से जुड़े होने की बात ही ध्वनित होती है। हमारी जड़े हमारे आदर्शों, सदाचारों और संस्कारों में निहित हैं। भारतीय जीवन के समस्त गुणों, ऐश्वर्यों और स्मृद्धियों की आधार शिला यही मूल्य, आदर्श अथवा संस्कार है । अनेक गुण-सत्य, उदारता, विनम्रता, दया, क्षमा, अहिंसा आदि व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठा दिलाते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने आस-पास के वातावरण और समाज को परिष्कृत तथा परिभार्जित करते रहते हैं।

भारतीय समाज में सदाचरण और आदर्शों को अधिक महत्व दिया गया है। भारतीय संस्कृति अध्यात्म पक्ष को लेकर पनपी है इस संस्कृति के मूल में जहाँ अध्यात्म ज्ञान, धर्म, नीति, दर्शन आदि समाविष्ट हैं वहाँ सौन्दर्य की उदात्त भावना भी समान्वित है। इसीलिए भारतीय संस्कृति को देव-संस्कृति कहा गया है। भारतीय मूल्य, व्यक्ति की आत्मिक शक्ति का विकास करने में सक्षम हैं जिससे देवतूल्य बनना उसके लिये असम्भव नहीं है। इस देव संस्कृति को बनाये रखने तथा बचाये रखने में संगीत ने अपूर्व सहयोग दिया है।

आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। भारतीय जनजीवन में सर्वत्र इस भावना के दर्शन होते हैं। यहाँ धर्म तथा ईश्वर में पर्याप्त निष्ठा रही हैं तथा समस्त प्राणियों के सुख शान्ति के लिए कामना की गई है। भारतीय संगीत का लक्ष्य भी आध्यात्म तथा धर्म से जुड़ा है।

भारतीय संस्कृति में कला को आत्मा से सम्बन्धित माना गया है। आध्यात्मिक दृष्टि से संगीत सर्वश्रेष्ठ कला का

www.ignited.in

लक्ष्य है। अतः संगीत के द्वारा संस्कारों और संस्कृति का संरक्षण अधिक संभव है। संगीत शिक्षकों पर इसका दायित्व अधिक होता है। विद्यालय के विभिन्न उत्सवों, राष्ट्रीय पर्वो, वार्षिकोत्सवों अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यार्थियों को एकता के सूत्र में बाँधकर उनसे अपनी सांस्कृतिक विरासत को प्रस्तुत करवाना सुखद संयोग होता है। भारतीय संगीत साधना ने जाति तथा धर्म के बन्धनों को तोड़ा है, इसलिए संगीत हमारे देश की सांस्कृतिक एकता की एक मजबूत कड़ी है।

सांगीतिक कार्यक्रमों में गीत, संगीत, नाट्य और अभिनयों के द्वारा संस्कारों, आदर्शों एवं सांस्कृतिक धरोहरों को हम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करने के साथ ही बुजुर्ग दर्शकों को आश्वस्त भी करते हैं कि हम संगीत के द्वारा आपकी दी हुई विरासत को संयोजनों में प्रयासरत है।

"संगीत एक मोहक कला है जो सर्वसाधारण को आकृष्ट करती है। इस परिष्कृत विशुद्धतम कला द्वारा आध्यात्मिक सोपान एवं सिद्धि तक पहुँच सम्भव होती है।"[2] गौरवशाली भारतीय परम्परा का निर्वहण सांस्कृतिक प्रदर्शनों द्वारा सहज ही सम्भव है। कार्यक्रम के आरम्भ में ईशवन्दना करके शुभत्व और कल्याण का संदेश देना, वातावरण को पावन भावनाओं से ओत-प्रोत कर देता है। देशगान जहाँ एक ओर देश भक्ति की भावना से भर देता है तो दूसरी ओर लोक संगीत दर्शकों को गाँव और प्रकृति से जोड़ने का कार्य करता है। भारतीय संगीत में विश्व मानवता की अन्तः प्रेरणा को श्रेष्ठ दिशा में प्रेरित करने तथा सद्गुणों को भलीभांति विकसित करने की अभूतपूर्व क्षमता है भारतीय संस्कृति की यह विशेषता है कि अपने विकास के साथ-साथ दूसरों के विकास और उत्थान को भी चाहती है- सर्वे भवन्तु सुखिनः ..... आदि सिद्धान्तों से यह अनुप्राणित है। जिसका परिचय अभी-अभी हुए राष्ट्रमण्डल खेलों के सांस्कृतिक कायक्रमों में देखने को मिलता है।

संगीत मानव को ईश्वर की परमसत्ता से जोड़ने में सक्षम है-गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि

नाऽहं वसामि वैकुण्ठे योगिना हृदये न च ।।

मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदं।।[3]

जीवन पद्वति, उत्सव, पर्व-त्यौहार, कला-कौशल, सामाजिक जीवन, आदि का सम्मिलित स्वरूप ही किसी संस्कृति का बोध करता है।[4] संस्कृति का यही स्वरूप भारतीय संगीत में प्रदर्शित होता है।

संगीत के क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की भाँति राजनीति, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, धर्मान्धता आदि संकुचित दृष्टिकोण वाली बातें कम ही प्रवेश कर सकी हैं, वास्तव में साम्प्रदायिक सद्भाव, एकता पूर्णरूप से संगीत में ही दिखाई देती है। संगीत सम्मेलनों में अक्सर यह देखा जाता है कि मंच पर हिन्दू गायक, मुस्लिम तबला वादक मराठी हारमोनियम संगतकार, बनारसी सारंगीवादक इत्यादि विभिन्न वर्ग एवं स्थान के संगीतज्ञ स्वर और लय का एक साथ रसास्वादन करते हैं और उनके सामने बैठ सभी वर्ग के श्रोता मंत्रमुग्ध होकर एकता के सूत्र में बँध जाते हैं जो एक अनोखा, अद्भुत सौहार्द है।[5]

भारतीय संगीत में घरानों की परम्परा आज भी विद्यमान है, जिसके फलस्वरूप विभिन्न सम्प्रदाय के लोग अपने-अपने धर्म के परम्परागत बंधनों की परवाह न करते हुए आत्मीय एकता का प्रतीक बन जाते हैं। यहाँ न कोई हिन्दू है न मुसलमान, न सिख है ना ईसाई, न कोई बंगाली है न मराठी, न ही कोई अमीर है न सामान्य परिवार का। यहाँ सभी समान भाव से कला के पुजारी हैं।

इतना ही नही आज तो सरहदों की सीमा को पार करके मैत्रीपूर्ण भावना से संगीत सम्मेलनों में एक मंच पर संगीत की आराधना करते हुए विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के कलाकारों को देखा जा सकता है। संगीत का ही यह प्रभाव है जो ऐसी दुनिया में ले जाता है जहाँ धर्म, कर्म, जाति, भाषा का कोई भेद-भाव नहीं रह पाता। जहाँ केवल आत्मीय एकता ही होती है। संगीत की इसी अद्भुत शक्ति के कारण फौज में भी राष्ट्रीय एकता के गीत सिखाये जाते हैं ताकि विभिन्न प्रान्तों एवं जातियों के जवानों में भावनात्मक एकता बनी रहे।

सामान्य शिक्षा मानसिक विकास की दृष्टि से तथा संगीत की शिक्षा मानसिक एवं आत्मीय शक्तियों के परिष्कार की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन दोनों प्रकार की शिक्षाओं से ही मनुष्य जीवन दृष्टि व जीवन मूल्यों के गहनतम आदर्शो से परिचित होकर समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध होता है।

भारतीय शिक्षा में संगीत प्राचीनकाल से ही एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। इसके अन्तर्गत कल्पना, सन्तुलन, आत्मभिव्यक्ति, आत्मनियंत्रण, स्वाभाविकता, गति, व्यायाम तथा और भी अनेक गुण संगीत विषय में समाहित हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि संगीत शिक्षण से शारीरिक, बौद्धिक विकास, भाव का मार्ग दर्शन, सहनशीलता का पाठ, भावभिव्यक्ति की योग्यता, उद्देश्य प्राप्ति के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति का विकास होता है। एकता की भावना का विकास समूहगान, वृन्दवादन, बैण्ड आदि द्वारा देखा जा सकता है। वास्तविक साम्प्रदायिक एकता पूर्ण रूप से संगीत में ही देखने

www.ignited.in

को मिलती है। संगीत शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थी में साधना शक्ति और संयम का गुण आता है।

व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाये संगीत जीवन का प्रमुख मूलाधार हे। नाद, लय व गति जो चेतन जीवन के विशिट लक्षण हैं, वे ही संगीत के विशिष्ट अंग है। संगीत के मूल तत्व ही मानव जीवन के संचालन तत्व हैं।

मुंशी प्रेमचन्द्र के शब्दों में, "मनोव्यथा जब अधिक असहय और अपार हो जाता है, उसे कहीं चैन नहीं मिलता, जब वह रूदन और क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नहीं पाती, तो संगीत के चरणों में जा गिरती है।"[6]

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा में संगीत के माध्यम से मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों को संस्कार रूप में विकसित किया जा सकता है। संगीत को अद्भुत शक्ति द्वारा मूल्य शिक्षा प्रदान करके समाज में पुनः अपनी सांस्कृतिक विरासत को सहजने-सँजोने का कार्य सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

संदर्भ-ग्रन्थ

1. भारतीय संस्कृति बनाम पाश्चात्य संस्कृति- डॉ. आभा तिवारी पृ0सं0 6
2. संगीत शिक्षण के विविध आयाम - पं0 छोटे लाल मिश्र
3. भगवद् गीता
4. भारतीय संस्कृतिः शाश्वत जीवन दृष्टि और संगीत पृ0 सं0 1
5. संगीत शिक्षण के विविध आयाम पृष्ठ सं0 34
6. संगीत शिक्षण के विविध आयाम पृष्ठ सं0 34

Corresponding Author

Dr. Ila Malviya*

Head of Department, Department of Music, Arya Kanya Degree College, Allahabad